B. A. -I (HISTORY) HONOURS, 2020.

NOTES PREPARED BY →

DR. MANITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
HAJIPUR, BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म में समानता एवं असमानता

- छठी शताब्दी ई० पू० में मध्यगंगा घाटी क्षेत्र में हुए सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन के मूल कर्णधार बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म था। इन दोनों संप्रदाय का जन्म परिवर्तित हो रहे परिस्थिति के कारण हुआ था। यद्यपि दोनों का जन्म समान परिवेश में हुआ था, इस कारणवश। दोनों के बीच जहाँ एक ओर समानता है वहाँ महत्वपूर्ण असमानता भी।

समानता →

- दोनों ही धर्म अनिश्वरवादी थे।
- दोनों ही धर्म के प्रणेता क्षत्रिय थे।
- दोनों ही धर्म के प्रणेताओं की पृष्ठभूमि राजकीय थी।
- दोनों के द्वारा वैदिक यज्ञ विधान तथा कर्मकाण्ड का विरोध किया गया।
- दोनों ने अपना उपदेश जनभाषा में दिया।
- महात्माबुद्ध ने जहाँ पाली भाषा का प्रयोग किया वहीं महावीर जैन ने प्राकृत भाषा का प्रयोग किया।
- दोनों ने जाति व वर्ण का विरोध करके समानता का उपदेश दिया। छुआछूत, ऊँच-नीच का दोनों ने विरोध किया गया।
- दोनों ही धर्म में सांसारिक विषमितता के क्षेत्र में वैदिक सिद्धांत को अमान्य कर दिया गया था।
- सरल, सादा एवं पवित्र जीवन-यापन पर दोनों धर्म में बल दिया गया।

Scanned with CamScanner

- दोनों धर्म नैतिकता के पाठ पढ़ाते थे।
- दोनों धर्म अहिंसावादी थे।

असमानता →

- जैनियों की दृष्टि में मोक्ष या निर्वाण का अर्थ है सिद्धवास्था में शरीर का त्याग जबकि बौद्धों के दृष्टि में निर्वाण का अस्तित्व की समाप्ति।
- जैन धर्म में आत्मा एवं जीव को शाश्वत माना गया है जबकि बौद्ध धर्म के अंतर्गत आत्मा का स्पष्ट रूप से निषेध किया गया है।
- जैन धर्म के अंतर्गत ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हुए यह कहा गया है कि यदि ईश्वर है तो उसका स्थान जैन तीर्थंकरों से नीचे है इसके विपरीत बौद्ध धर्म के ईश्वर को स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया गया है।
- जैन धर्म के अंतर्गत काया - क्लेश के मार्ग पर चलकर कठोर तपों के माध्यम से निर्वाण प्राप्ति पर बल दिया है इसके विपरीत महात्मा बुद्ध ने मध्यम मार्ग प्रतिपदा पर ज़ोर दिया है।
- जहाँ जैन धर्म के दिगम्बर शाखा के अंतर्गत नग्न रहने पर ज़ोर दिया जाता है वहीं बौद्ध धर्म में किसी भी परिस्थिति में वस्त्र त्याग की अनुशंसा नहीं की जाएगी।
- जैन धर्म में ब्राह्मण पुरोहित को स्थान दिया गया है परंतु बौद्ध धर्म में ब्राह्मण पुरोहित को किसी भी रूप में स्थान नहीं दिया गया।
- अपने विकसित अवस्था में भी जैन धर्म मुख्यतः दक्षिण व पश्चिम भारत में अधिक लोकप्रिय रही। इसके विपरित बौद्ध धर्म उत्तर, पूर्व तथा मध्यभारत में सर्वाधिक लोकप्रिय रहा।

Scanned with CamScanner